दैनिक जागरण

चैत्र नवरात्र 2025

दैनिक जागरण

शक्ति की आराधना का पर्व

–वासंतिक नवरात्र की अवधि चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से नवमी तिथि तक है।

–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 29 मार्च सायं 4 :56 बजे आरंभ हो रही है, जो 30 मार्च दोपहर 2 :46 बजे तक है।

–उदयातिथि मान के अनुसार नवरात्र आरंभ 30 मार्च को होगा।

–इस बार पंचमी तिथि का क्षय होने से शक्ति आराधना आठ दिन यानी छह अप्रैल तक है।

दैनिक जागरण

कलश स्थापना

पंडित विनय कुमार पांडेय कहते हैं कि ब्रह्म मुहूर्त से लेकर दोपहर 12 :35 बजे तक कलश स्थापना–पूजन करना शुभ है, लेकिन किसी कारणवश इस दौरान पूजन न कर पाएं तो रात्रि के आठ बजे तक कर सकते हैं।

पूजा की विधि

पूजा स्थल को साफ करें। मिट्टी या किसी अन्य धातु का कलश लेकर उस पर स्वस्तिक का चिह्न बनाएं और कलावा लपेटें। कलश में साफ जल भरकर उसमें लौंग, इलायची, सुपारी, हल्दी, इत्र, अक्षत और एक सिक्का डालें। इसमें आम के पत्ते लगाकर नारियल रखें। फर्श पर मिट्टी डालकर या मिट्टी के पात्र में साफ मिट्टी भरकर गेहूं या जौ या सात प्रकार के अनाज बोएं और इस पर कलश रख दें। इसी कलश के पास बैठकर मां की पूजा करें।

दैनिक जागरण

पूजन विधान

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि में 30 मार्च को प्रात :काल नित्य क्रिया से निवृत्त होकर और स्नान कर नवरात्र व्रत का संकल्प लेना चाहिए। गणपति पूजन के उपरांत लकड़ी के पटरे पर गेरू को पानी में घोलकर नौ देवियों की आकृति या सिंहवाहिनी दुर्गा की प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए। मिट्टी की डली (टुकड़ा) पर कलावा लपेटकर गणपति रूप में कलश के ऊपर रखना चाहिए। कलश के पास गेहूं या जौ का पात्र रखकर वरुण पूजन करना चाहिए। नवरात्र के प्रत्येक दिन मां भगवती के एक स्वरूप शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी तथा सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। यह क्रम चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को प्रात :काल शुरू होता है। प्रतिदिन मां भगवती का ध्यान तथा पूजन करना चाहिए।

दैनिक जागरण

पारण

प्रतिपदा और अष्टमी का व्रत रखने वाले श्रद्धालु अष्टमी तिथि में पांच अप्रैल को व्रत करेंगे। पारण नवमी तिथि में छह अप्रैल को करेंगे। नवरात्रपर्यंत व्रत करने वाले श्रद्धालु सात अप्रैल को सूर्योदय उपरांत पारण करेंगे।

विधि : स्नान कर मां दुर्गा की विधिपूर्वक पूजा करें, फिर आरती करें और पूजा में हुई त्रुटियों के लिए क्षमा याचना करें। देवी का प्रसाद ग्रहण करने के बाद सात्विक भोजन करें।

दैनिक जागरण

प्रथम शैलपुत्री

शक्ति आराधना के विशेष काल वासंतिक नवरात्र में प्रथम दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि में मां जगदंबा के प्रथम स्वरूप देवी शैलपुत्री की आराधना-साधना और दर्शन-पूजन किया जाता है। भगवती का स्वरूप लावण्यमयी व अतिरूपवान है। अपनी माया के अनुसार पर्वतराज हिमालय के घर कन्या के रूप में अवतरित होने के कारण इनका नामकरण शैलपुत्री के रूप में हुआ। इनका वाहन वृषभ यानी बैल है। देवी दाएं हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में पद्म यानी कमल पुष्प धारण किए हैं। भगवान शिव की भांति मां के इस स्वरूप का निवास भी पर्वतों पर ही रहता है। शैल पर्वत की चोटी ही शिखर है। मां शैलपुत्री का पूजन जीवन में सफलता के उच्चतम स्तरों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता के लिए सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने की शक्ति पर्वतकुमारी मां शैलपुत्री प्रदान करती हैं। इससे शरीर में स्थित कुंडलिनी शक्ति जाग्रत होकर रोग-शोक रूपी दैत्यों का विनाश करती है। मां का यह रूप साधक को साधना में लीन होने की शक्ति, साहस, बल व आरोग्य का वरदान प्रदान करता है। मां के इस स्वरूप को श्वेत व लाल रंग की वस्तुएं प्रिय हैं। अत : नवरात्र के पहले दिन देवी के प्रथम स्वरूप मां शैलपुत्री को सफेद या लाल रंग के पुष्प अर्पित कर लाल सिंदूर अर्पित किया जाता है। गो दुग्ध से निर्मित मिष्ठान-पकवान का भोग लगाने से मां प्रसन्न होकर समस्त प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं। दुख-दारिद्र्य दूर कर घर के समस्त सदस्यों को रोग-शोक मुक्त करती हैं।

दैनिक जागरण

द्वितीयं ब्रह्मचारिणी

शक्ति की अधिष्ठात्री मां जगदंबा की पूजा-आराधना के विशेष काल वासंतिक नवरात्र में द्वितीय दिन देवी के द्वितीय स्वरूप देवी ब्रह्मचारिणी की पूजा की जाती है। पूर्ण चंद्रमा के समान निर्मल, कांतिमय भव्य रूप और दो भुजाओं वाली ब्रह्मचारिणी सर्वव्यापी ब्रह्माण्डीय चेतना का दूसरा स्वरूप हैं। उनके बाएं हाथ में कमंडल तथा दाएं हाथ मं जप की माला रहती है। सत, चित्त, आनंदमय ब्रह्म की प्राप्ति कराना ही ब्रह्मचारिणी का स्वभाव है। इनका वाहन शिखर अर्थात पर्वत की चोटी को ही बताया गया है। मार्कंडेय पुराण के मुताबिक इन्होंने कई वर्षों तक कठिन तप और अपनी शक्तियों से राक्षसों का नाश किया। ये देवी कृपा और दया की मूर्ति हैं। शिवपुराण में वर्णित है कि मां भगवती सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में भी शिव जी की प्राप्ति के लिए तप करती रहीं। तीनों लोकों में भगवती के इस रूप का तेज व्याप्त हो गया, तब ब्रह्माजी ने आकाशवाणी से इस रूप को भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने का वर दिया। देवी के इस रूप के साधक सन्मार्ग से कभी नहीं हटते और जीवन के कठिन संघर्षों में भी बिना विचलित हुए अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। जीवन के कठिन संघर्षों में भी मन विचलित नहीं होता और दीर्घायु प्राप्त होती है। मां दुर्गा के इस स्वरूप को गुड़हल और कमल के फूल बेहद पसंद हैं। नवरात्र के दूसरे दिन इन्हीं पुष्पों को अर्पित करने तथा चीनी, मिश्री और पंचामृत का भोग अर्पित करने से भगवती अति शीघ्र प्रसन्न होकर साधक को लंबी आयु, सौभाग्य और प्रत्येक कार्य में सफलता प्रदान करती हैं।

दैनिक जागरण

तृतीयं चन्द्रघंटेति

शक्ति की अधिष्ठात्री जगदंबा–परांबा की आराधना–उपासना के विशेष काल वासंतिक नवरात्र के तीसरे दिन देवी के तृतीय स्वरूप चंद्रघंटा का दर्शन–पूजन किया जाता है। देवी दुष्ट शक्तियों को नष्ट कर धर्म की रक्षा करती हैं। देवी के मस्तक पर घंटे के आकार का अर्द्धचंद्र है। इनके दस हाथ हैं, जिनमें एक हाथ में कमल का फूल, दूसरे में कमंडल, तीसरे में त्रिशूल, चौथे में गदा, पांचवें में तलवार, छठे में धनुष और सातवें में बाण है। शेष तीन हाथों में एक हाथ हृदय पर, एक आशीर्वाद मुद्रा में और एक अभय मुद्रा में रहता है। ये रत्न जड़ित आभूषण धारण करती हैं। गले में सफेद फूलों की माला रहती है। इनका वाहन बाघ है। यह भयानक घंटे के नाद मात्र से शत्रु व दैत्यों का वध करती हैं। इनका स्वरूप दानव, दैत्य, राक्षसों को कंपाने वाला तथा इनकी प्रचंड ध्वनि उनकी ऊर्जा से युक्त कर देने वाली होती है। इनकी चंद्रघंटे की ध्वनि बुरी शक्तियों को भागने पर विवश करती है। इसके विपरीत साधकों और भक्तों को इनका स्वरूप शांत और भव्य दिखाई देता है। देवी चंद्रघंटा अपने भक्तों को अभय वरदान देने वाली तथा परम कल्याणकारी हैं। ये घंटे के कंपन के समान मन की नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक उर्जा में परिवर्तित कर भक्तों के भाग्य को समृद्ध करती हैं। इनकी आराधना से साधक में न केवल साहस और निर्भयता का बल्कि सौम्यता और विनम्रता का भी विकास होता है। नवरात्र के तीसरे दिन मां के इस स्वरूप को दूध या उससे बने पदार्थों का भोग लगाने से मन नियंत्रित रहता है।

दैनिक जागरण

कूष्मांडेति चतुर्थकम्

शक्ति की अधिष्ठात्री मां जगदंबा, पराम्बा की आराधना-साधना के विशेष काल वासंतिक नवरात्र की चतुर्थी तिथि में देवी के चतुर्थ स्वरूप मां कूष्मांडा का दर्शन-पूजन कर भक्तगण अपनी आंतरिक प्राणशक्ति को उर्जावान बनाते हैं। पुराणों में मिलने वाले वर्णन के अनुसार अपनी मंद और हल्की-सी मुस्कान मात्र से अंड को उत्पन्न करने वाली होने के कारण इन्हें कूष्मांडा कहा गया। जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, चारों ओर अंधकार ही अंधकार था, तब इन्हीं देवी ने अपने मंद हास्य से प्रकाशित करते हुए अंड की उत्पत्ति की, जो कि बीज रूप में ब्रह्म तत्व के मिलने से ब्रह्मांड बना। इस प्रकार मां दुर्गा का यही अजन्मा और आद्यशक्ति रूप है। कूष्मांडा का अभिप्राय कुम्हड़े से है। प्राणशक्ति गोलाकार कुम्हड़े रूप में मानव शरीर में स्थित है। देवी सूर्य लोक वासी हैं। इनके स्वरूप की कांति और तेज मंडल भी सूर्य के समान ही अतुलनीय है। मां कूष्मांडा के आठ हाथ हैं। सात हाथों में क्रमश : कमंडल, धनुष, बाण, कमल का फूल, अमृत कलश, चक्र तथा गदा है, जबकि आठवें हाथ में सर्वसिद्धि और सर्वनिधि देने वाली जपमाला है। इनकी सवारी शेर है। ये अपने भक्तों के शत्रु, रोग, दुख और भय को दूर करती हैं। नवरात्रि के चौथे दिन मां के इस स्वरूप को मालपुए का भोग अर्पित करना चाहिए। इस भोग-प्रसाद को दान करने के साथ स्वयं भी श्रद्धा भाव से ग्रहण करना चाहिए। ऐसा करने से भक्तों की बुद्धि का विकास होने के साथ-साथ निर्णय क्षमता भी बढ़ती है।

दैनिक जागरण

पंचमं स्कंदमातेति

मां जगदंबा-परांबा का पंचम स्वरूप स्कंदमाता का है। शक्ति आराधना के विशेष काल वासंतिक नवरात्र की पंचमी तिथि में इनका ही दर्शन-पूजन व साधना-आराधना की जाती है। देवी इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति का समागम हैं। ब्रह्मांड में व्याप्त शिव तत्व का जब मिलन इन त्रिशक्ति के संग होता है तो स्कंद (कार्तिकेय) का जन्म होता है। अपनी गोद में ये भगवान स्कंद को बैठाए रखती हैं। स्कंदमाता का विग्रह चार भुजाओं वाला है। दाएं ओर ऊपर वाली भुजा से धनुष बाणधारी, छह मुखों वाले (षडानन) बाल रूप स्कंद को पकड़े रहती हैं। बाईं ओर की ऊपर वाली भुजा आशीर्वाद और वर प्रदाता मुद्रा में है। नीचे वाली दोनों ओर की भुजाओं में माता कमल पुष्प रखती हैं। इनका वर्ण पूरी तरह निर्मल कांति वाला श्वेत है। ये कमलासन पर विराजती हैं। इनका वाहन सिंह है। यह वात्सल्य विग्रह हैं, अत : कोई शस्त्र धारण नहीं करती हैं। मां स्कंदमाता की आराधना से जीवन में सही दिशा में ज्ञान का उपयोग कर उचित कर्मों द्वारा सफलता, सिद्धि प्राप्त होती है। इनकी कांति का अलौकिक प्रभा मंडल इनके उपासक को भी मिलता है। इनकी उपासना से साधक को मृत्यु लोक में ही परम शांति और सुख मिलता है। उसकी कोई लौकिक कामना शेष नहीं रहती। नवरात्र के पांचवें दिन मां को प्रसन्न करने के लिए केले का भोग लगाना चाहिए या फिर इसे प्रसाद स्वरूप दान करना चाहिए। इससे परिवार में सुख-शांति का वास होता है।

दैनिक जागरण

षष्ठं कात्यायनीति च

शक्ति की अधिष्ठात्री मां जगदंबा-परांबा की आराधना-साधना के विशेष काल वासंतिक नवरात्र की षष्ठी तिथि में देवी के षष्ठ स्वरूप मां कात्यायनी का दर्शन-पूजन किया जाता है। सुनहरे और चमकीले वर्ण वाला देवी का स्वरूप चार भुजाओं वाला है। दाहिनी ओर की ऊपर वाली भुजा अभय देने वाली मुद्रा में तथा नीचे वाली भुजा वर देने वाली मुद्रा में रहती हैं। बायीं ओर की ऊपर वाली भुजा में वे चंद्रहास खड्ग (तलवार) धारण करती हैं, जबकि नीचे वाली भुजा में कमल का फूल रहता है। रत्नाभूषणों से अलंकृत कात्यायनी देवी आक्रामक और झपट पड़ने वाली मुद्रा में रहने वाले सिंह पर सवार रहती हैं। ये महिषासुर का मर्दन करने वाली हैं। ये रूप त्रिदेवों यानी ब्रह्म, विष्णु और शिवजी के अंश से प्रकट हुआ है। शास्त्रानुसार देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए महर्षि कात्यायन के आश्रम में प्रकट होकर भगवती कात्यायनी के नाम से विख्यात हुईं। इनका स्वरूप अत्यंत भव्य व दिव्य है। एकाग्रचित और पूर्ण समर्पित भाव से कात्यायनी देवी की उपासना करने वाला भक्त बड़ी सहजता से चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति कर लेता है। नवरात्र के छठे दिन भगवती के इस रूप को प्रसन्न करने के लिए मधु (शहद) का भोग लगाकर स्तवन करने से साधक को सुंदर यौवन प्राप्त होता है। साथ ही मां लक्ष्मी के रूप में माता घर में वास करती हैं। कात्यायनी देवी की पूजा-आराधना से कामकाज में आ रहीं समस्त प्रकार की रुकावटें दूर होती हैं।

दैनिक जागरण

ऊं क्लीं ऐं श्रीं कालिकायै नमः

सप्तमं कालरात्रि

शक्ति आराधना के विशेष काल वासंतिक नवरात्र की सप्तमी तिथि में जगदंबा-परांबा मां दुर्गा के सप्तम स्वरूप देवी कालरात्रि का दर्शन-पूजन किया जाता है। देवी दुर्गा भक्तों की रक्षा के लिए भयानक कालरात्रि रूप में प्रकट हुईं। घने अंधेरे की तरह गहरे काले रंग वाली, तीन नेत्रों वाली, सिर के बाल बिखरे रखने वाली और अपनी नाक से आग की लपटों के रूप में सांसें निकालने वाली कालरात्रि का यह रूप ज्ञान और वैराग्य प्रदान करता है। इनके तीनों नेत्र ब्रह्मांड के गोले की तरह गोल हैं। इनके गले में विद्युत जैसी छटा देने वाली सफेद माला सुशोभित होती है। इनके चार हाथ हैं। मां कालरात्रि का स्वरूप भयानक है, लेकिन वे भक्तों को शुभ फल ही देती हैं। इनका वाहन गर्दभ है। मां कालरात्रि के चार हाथों में एक हाथ अभय मुद्रा में तथा एक वर मुद्रा में रहता है। दाहिनी ओर का ऊपर वाला हाथ हंसिया अथवा चंद्रहास खड्ग धारण करता है, जबकि नीचे वाले हाथ में कांटेदार कटार रहती है। मां का ऊपरी तन लाल रक्तिम वस्त्र से तथा नीचे का आधा भाग बाघ के चमड़े से ढका रहता है। मां कालरात्रि नकारात्मक, तामसी और राक्षसी प्रवृत्तियों का विनाश करके भक्तों को दानव, दैत्य, राक्षस, भूत-प्रेत आदि से अभय प्रदान करती हैं। नवरात्र के सातवें दिन मां को गुड़ का नैवेद्य अर्पित करने से शोक मुक्त रहने का वरदान प्राप्त होता है और भक्तों के पास दरिद्रता नहीं आती। हर तरह के दुख दूर होते हैं।

दैनिक जागरण

महागौरीति चाष्टमम्

शक्ति की अधिष्ठात्री मां जगदंबा की साधना-आराधना के विशेष काल वासंतिक नवरात्र में देवी के अष्टम स्वरूप में महागौरी का दर्शन-पूजन किया जाता है। पार्वती रूप में जब मां भगवती ने भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठिन तपस्या की, तब इस कठोर तप के कारण उनकी देह क्षीण और वर्ण काला पड़ गया। अंत में तपस्या से संतुष्ट होकर जब भगवान शिव ने अपनी जटा से निकलती पवित्र गंगाधारा का जल उन पर डाला, तो वे विद्युत प्रभा के समान अति कांतिमान और गौर वर्ण की हो गईं। ये चंद्रमा और कुंद के फूल की तरह गौरी हैं। इसी कारण इन्हें महागौरी कहा जाता है। इनके सभी वस्त्राभूषण और यहां तक कि इनका वाहन भी हिम के समान सफेद या गौर रंग वाला वृषभ अर्थात बैल माना गया है। इनकी चार भुजाएं हैं। इनमें ऊपर के दाहिने हाथ में अभय मुद्रा और नीचे वाले दाहिने हाथ में त्रिशूल है। ऊपर वाले बाएं हाथ में डमरू और नीचे वाला बायां हाथ वर मुद्रा में है। इन्होंने कठिन तप से भगवान शंकर को प्राप्त किया था। पूजन-अर्चन से माता महागौरी का अतिसौंदर्यवान, शांत, करुणामयी स्वरूप मनोवांछित फल देता है और जन्म-जन्मांतर के पाप धुल जाते हैं। मनुष्य की प्रवृत्ति सत् की ओर प्रेरित होती है और असत् का विनाश होता है। नवरात्र के आठवें दिन मां के इस रूप का ध्यान कर पूजा-अर्चना कर नारियल का भोग लगाने वाले साधकों को सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।

दैनिक जागरण

नवमं सिद्धिदात्री

जगदंबा दुर्गा का नौवां स्वरूप देवी सिद्धिदात्री हैं। शक्ति आराधना के विशेष काल वासंतिक नवरात्र की नवमी तिथि में इनका दर्शन-पूजन और साधना-आराधना की जाती है। माता सिद्धिदात्री चतुर्भुज और सिंहवाहिनी हैं। अचला रूप में कमल पुष्पासन पर विराजती हैं। माता के दाहिनी ओर के नीचे वाले हाथ में चक्र और ऊपर वाले हाथ में गदा है। बाईं ओर के नीचे वाले हाथ में शंख तथा ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प रहता है। ये सभी सिद्धियों को देने वाली हैं। इनकी कृपा प्राप्त होने से लौकिक -पारलौकिक समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सिद्धि संपूर्णता का प्रतीक है, इसलिए सिद्धियां प्राप्त होने पर सच्चे मन से स्मरित समस्त मनोकामनाएं बिना विघ्न-बाधा के पूरी होती हैं। देवी भागवत पुराण में वर्णित है कि भगवान शिव ने भी इन्हीं की कृपा से सिद्धियों को प्राप्त किया था। इन्हीं की कृपा से भगवान शिव का आधा शरीर देवी का हुआ और वे लोक में अर्द्धनारीश्वर रूप में स्थापित हुए। नवरात्र की नवमी तिथि में शक्ति के नवम स्वरूप की पूजा-अर्चना कर हलवा, पूरी, चना, खीर, पुआ आदि का भोग लगाकर एकाग्रता और निष्ठा से विधिवत पूजन करने से सभी सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं, जिसके फलस्वरूप पूर्णता के साथ सभी कार्य संपन्न होते हैं। जीवन में सब प्रकार से सुख-शांति का वरदान प्राप्त होता है।

नवरात्र से संबंधित
जानकारियों और खबरों के
लिए पढ़ते रहिए